1 मन वच तन कर शुद्ध भजो जिन...

मन वच तन कर शुद्ध भजो जिन, दाव भला पाया ।
अवसर फेर मिले नहिं ऐसो, यो सतगुरु गाया ।।१।।

बस्यो अनादि निगोद निकसि, फिर थावर देह धरी ।
काल असंख्य अकाज गंवायो, नेक न समझ परी ।।२।।

चिन्तामणि दुर्लभ लहिये, त्यों त्रस पर्याय लही ।
लट पिपील अलि आदि जन्म में, लहो न ज्ञान कहीं ।।३।।

पंचेन्द्रिय पशु भयो कष्ट तें, तहाँ न बोध लहो ।
स्वपर विवेक रहित बिन संयम, निश दिन भार बहो ।।४।।

चौपथ चलत रतन लहिये, त्यों मनुष देह पाई ।
सुकुल जैनवृष सत् संगति ये अति दुर्लभ भाई ।।५।।

यों दुर्लभ नर देह कुधी जे विषय संग खोबें ।
ते नर मूढ़ अजान सुधारस पाय पाँव धोबै ।।६।।

दुर्लभ नरभव पाय, सुधी जे, जैनधर्म सेवें ।
'दौलत' ते अनन्त अविनाशी शिव सुख को बेवें ।।७।।

हे प्राणी! सद्गुरु कहते हैं कि बहुत भाग्य से शुभ अवसर मिला है इसलिये मन–वचन–काय को शुद्ध करके श्री जिनेन्द्र भगवान का ध्यान करो। ऐसा अवसर बार–बार नहीं मिलता है ।।१।।

अनादि काल से निगोद में रहा और वहाँ से निकलकर स्थावर पर्याय प्राप्त की एवं तुमने अज्ञान के कारण असंख्य काल आत्म कल्याण किये बिना ही गंवा दिया है ।।२।।

जिस प्रकार चिन्तामणि रत्न प्राप्त करना दुर्लभ है उसी प्रकार तुमने इस दुर्लभ त्रस पर्याय को प्राप्त किया है, चीटीं, इल्ली, भंवरें आदि पर्यायों में सम्यक ज्ञान प्राप्त करना असंभव है ।।३।।

उसके बाद पंचेन्द्रिय पशु पर्याय प्राप्त कर बहुत कष्ट सहन किया परन्तु कहीं भी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। अपने व पराये के ज्ञान बिना और संयम के बिना दिन–रात बहुत दुख सहन किया।।४।।

जिस प्रकार चौराहे पर पड़े हुये रत्न की किसी को प्राप्ति हो जाये, उसी प्रकार तुमने यह मनुष्य देह की प्राप्ति की और उसमें भी जैन कुल, जैन धर्म और सज्जनों की संगति प्राप्त करना तो महादुर्लभ है।।५।।

जो व्यक्ति दुर्लभ मनुष्य देह को प्राप्त करके विषय भोगों में बरबाद करते हैं ऐसे मनुष्य मूर्ख और अज्ञानी होते हैं मानो वे अमृत को प्राप्त कर उससे पैर धोने का कार्य करते हैं।।६।।

कविवर पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि जो बुद्धिमान पुरुष दुर्लभ मनुष पर्याय को प्राप्त करके जैन धर्म का सेवन करते हैं वे पुरुष अनंत और अविनाशी मोक्ष सुख का बीज बोते हैं अर्थात् भविष्य में मोक्ष पद प्राप्त करते हैं।।७।।